फोकस

अस्पताल से होने वाले सेप्टिसीमिया की वजह से
विश्व में होती है हर घंटे में 36 मरीजों की मौत

अस्पतालों में घात में बैठे हैं पांच व

अगर आप इलाज के लिए अस्पताल जा रहे हैं तो सावधान हो जाइए। ऑपरेशन थियेटर, आईसीयू, जनरल वार्ड, ओपीडी और लॉन्ड्री, ये पांच जगह आपको बीमार कर सकती हैं। दिल्ली समेत देशभर के 137 सरकारी अस्पतालों में संक्रमण का स्तर जानने के लिए किया गया अध्ययन इस बात की तस्दीक करता है। ग्लोबल सेप्सिस एलायंस और इंडिकैप इंडिया का अध्ययन बताता है कि इन पांच जगहों पर पांच ऐसे वायरस हैं जो मरीज को और बीमार कर रहे हैं। हैरानी की बात यह है कि निजी अस्पताल भी इनकी जद में हैं। इस बारे में बताती निशि भाट की रिपोर्ट

इस अध्ययन में राजधानी के पांच प्रमुख सरकारी अस्पताल भी शामिल हैं। ग्लोबल सेप्सिस एलायंस के संयुक्त सचिव डॉ. राजेश पांडे ने बताया कि अस्पतालों की ये जगह कई कारणों से वायरस से घिरी हुई हैं। सबसे प्रमुख कारण एक बिस्तर पर एक से अधिक मरीजों का इलाज करना है। नतीजतन, वायरस एक मरीज से दूसरे मरीज तक पहुंच जाते हैं।

इनका सबसे ज्यादा असर एचआईवी और टीबी के मरीजों पर देखा गया है जिनकी रोग प्रतिरोधक क्षमता अन्य मरीजों की अपेक्षा कम होती है। वैश्विक आंकड़े बताते हैं कि अस्पताल से फैलने वाले वायरस और इससे होने वाले सेप्टिसीमिया की वजह से हर घंटे में 36 मरीजों की मौत हो जाती है।

मुश्किल यह है कि मरीज में एचएआई (हॉस्पिटल एक्वायर्ड इंफेक्शन) का असर कितना प्रतिशत हुआ है? इसके लिए अभी तक कोई जांच नहीं है। हालांकि कई अस्पताल विभिन्न जगहों में संक्रमण के स्तर का पता लगाने के लिए डिवाइस लगाने की पहल कर चुके हैं। इंडियन सोसाइटी ऑफ क्रिटिकल केयर मेडिसन के डॉ. राजेश चावला कहते हैं कि सेप्सिस से बचने और अस्पताल को संक्रमण मुक्त करने के लिए सही समय पर जांच जरूरी है।

वहीं अमेरिका सहित कई विकसित देशों में अस्पताल संक्रमण की मॉनिटरिंग के लिए एनएनआईएस (नेशनल नोसोकोमियल इंफेक्शन सर्विलांस सिस्टम) काम करता है। वहां संक्रमण की स्थिति का डाटा तैयार किया जाता है।

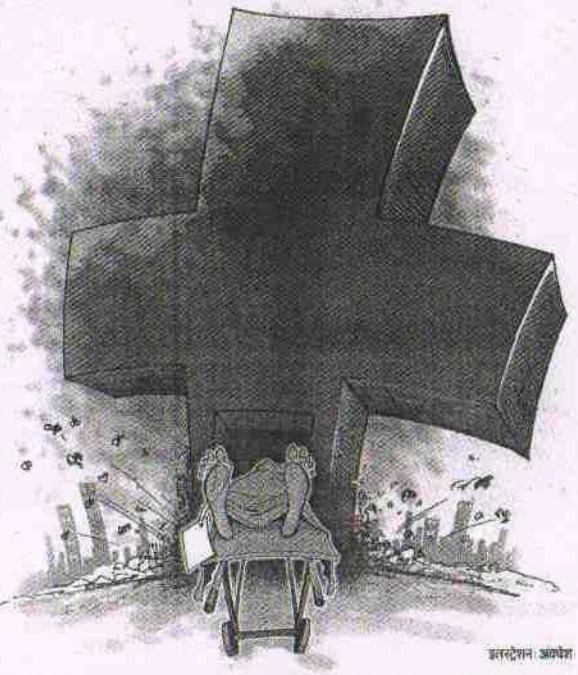

इलस्ट्रेशन : अवधेश

वायरस जो कर रहे हैं बीमार

ये है खतरनाक जगह

ऑपरेशन थियेटर

अस्पताल की इस जगह पर वायरस का सबसे ज्यादा खतरा होता है। इससे बचने के लिए हर सर्जरी के बाद दो घंटे के लिए कमरे का फिम्युलाइजेशन जरूरी बताया गया है लेकिन सर्जरी की अधिक संख्या होने के कारण विसंक्रमित करना हर बार संभव नहीं है। सर्जरी में इस्तेमाल होने वाले उपकरण और पैरामेडिकल स्टाफ के हाथों से भी संक्रमण फैलता है।

आईसीयू

आईसीयू के तापमान में वायरस आसानी से एक जगह से दूसरी जगह पहुंच जाते हैं। मरीज पर इस्तेमाल किए जाने वाला ऑक्सीजन मास्क आसानी से विसंक्रमित नहीं हो पाता। ऐसे में, वायरस मरीजों को बीमार कर देते हैं।

जनरल वार्ड

जनरल वार्ड में इस्तेमाल किए जाने वाले उपकरणों से स्ट्रेप्टोकॉकस वायरस का सबसे अधिक संक्रमण होता है। यह एक मरीज से दूसरे मरीज के शरीर में आसानी से प्रवेश कर जाता है। हालांकि कई अस्पतालों के वार्ड में एक से अधिक परिजन की अनुमति नहीं है। बावजूद इसके यहां लोग सबसे ज्यादा वायरस की चपेट में आ रहे हैं।

ओपीडी

ओपीडी अस्पताल का वह क्षेत्र होता है जहां हर बीमारी के मरीज एक साथ आते हैं। भीड़ में खांसने, छींकने और सांस लेने से वायरस अन्य मरीज के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। फ्लू वायरस के अलावा एमआरएसए वायरस सबसे अधिक ओपीडी को प्रभावित करता है।

लॉन्ड्री

लॉन्ड्री में भी वायरस होते हैं जो चादर और तकिए के जरिए मरीज तक पहुंचते है। इनसे बचने के लिए ओजोन तकनीक का सहारा लिया जा रहा है।

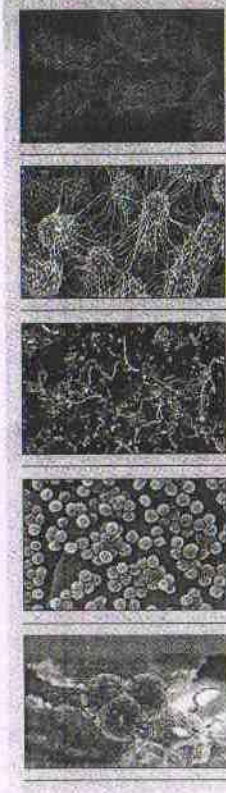

उठाए हैं कुछ कदम

- एम्स ट्रामा सेंटर ने हाल ही में अस्पताल में संक्रमण का पता लगाने के लिए डिवाइस लगाया है
- सफदरजंग अस्पताल के बर्न युनिट में शू डिस्पेंसर और संक्रमण दूर करने वाले स्प्रे का छिड़काव किया जाता है
- संक्रमण कम करने के लिए अस्पताल परिजनों की संख्या सीमित कर रहे हैं। उन्हें निश्चित समय में ही प्रवेश दिया जाता है। इतना ही नहीं, कुछ तो सर्जरी या ऑपरेशन के बाद मरीज को घर पर जल्द ही भेजने की योजना बना रहे हैं